होली हुड़दंग

साँझा संग्रह

संपादक - डॉ. प्रीति सुराना

www.antrashabdshakti.com

(साझा संकलन)

संपादक

डॉ. प्रीति सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-021-6"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- डॉ. प्रीति सुराना

मूल्य - ५०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

VIVEKANAND EK ADARSH EDITED BY DR. PRITI SURANA

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

(खण्ड-1)

1. होली हुड़दंग और अन्तरा शब्दशक्ति परिवार-
डॉ. प्रीति सुराना 5

2. अन्तरा शब्दशक्ति में होली की खिचड़ी- साझा हास्य 9

3. होली में भांग का कमाल- अदिति रूसिया 16

4. फोन के बहाने होली की हुड़दंग- अदिति रूसिया 18

5. होली के बहाने हुआ प्यार- मीनाक्षी सुकुमारन 19

6. होली की मस्ती- मंजू सरावगी 20

7. होली हुड़दंग और परंपराएँ- डा० भारती वर्मा बौड़ाई 22

8. मठरियाँ (हास्य कथा)- डा० भारती वर्मा बौड़ाई 26

9. होली की पाती- पंकज जौहरी 28

10. होली का हुड़दंग- राधा गोयल 30

11. प्रीत का रंग- नीरजा मेहता 'कमलिनी' 35

12. ससुराल में पहली होली- मीना विवेक जैन 37

13. बंदरों की होली- ललिता नारायणी 38

14. रंगीला सरप्राइज- निधि रूसिया बड़ेरिया 39

15. भांग का असर- आभा दवे, मुम्बई 41

16. प्रचार- आभा दवे, मुम्बई 43

17. होलिका दहन का अवकाश- रचना उपाध्याय 45

18. बुरे काम का बुरा नतीजा- रेखा ताम्रकार 'राज' 47

19. होली (5-व्यंग्य)- श्रीमती बबिता चौबे "शक्ति" 50-54

(खण्ड-2)

1.आज होली में,..!- मंजू सरावगी 55

2. गड़बड़झाला- अदिति रूसिया 57

3. दोस्ती के रंग- किरण मोर 59

4. अंतरा की होली- किरण मोर 60

5.जोगीरा सा रा रा- नीरजा मेहता 'कमलिनी' 65

6. मुस्कानों का बागबान- नवनीता दुबे नूपुर 68

7. अंतरा की अनोखी होली- मीना विवेक जैन 69

8.बुरा न मानो होली है (होली नामकरण)- 70-76

1.पिंकी परुथी 'अनामिका'

2. नवीन जैन अकेला

3. पूनम कतरियार

4. अदिति रुसिया

5.कृति गुप्ता

6.शीतल खण्डेलवाल

9.बूझो तो जाने ????- कीर्ती प्रदीप वर्मा 77

होली हुड़दंग और अन्तरा शब्दशक्ति परिवार

आज अन्तरा शब्दशक्ति ने केवल एक साहित्यिक मंच, सोशल मीडिया का उपक्रम, वेबपत्रिका, व्हारसप या फेसबुक समूह और पेज या प्रकाशन के रूप में अपनी पहचान नहीं बनाई है बल्कि आज अन्तरा शब्दशक्ति एक परिवार बन चुका है जहाँ प्रेम है, विश्वास है, समर्पण है, दायित्व है, शिकवे-शिकायतें है, रूठना-मनाना है, अपनापन है, अपेक्षाएँ है, आपसी सामंजस्य और सहयोग की भावना है प्रेरणा है यानि एक परिवार के सारे मूलभूत तत्व अन्तरा शब्दशक्ति में मौजूद हैं।

जब परिवार हो तो उत्सव और त्योहार भी होंगे। त्योहारों की बात हो और होली का जिक्र न हो ये भी मुमकिन नहीं। होली का ज़िक्र हो और रंग-भंग, मस्ती और हुड़दंग न हो ऐसा भला हो सकता है क्या?

इस बार अन्तरा शब्दशक्ति परिवार ने मनाई पूरे 3 दिन तक होली। साहित्य के लिए एक अनूठा माहौल बना। पहले दिन हास्य-व्यंग्य, लघुकथाएं, संस्मरण और अनुभवों के नाम रहा, दूसरा दिन होली की कविताओं के साथ बीता और होली के दिन

सबने बचपन याद करते हुए एक दूसरे होली के टाइटल दिए और तुकबंदियों का सिलसिला होली को यादगार बना गया।

अपने अन्तरा शब्दशक्ति परिवार की कुछ यादें चुपके से एक किताब में समेट लाई हूँ क्योंकि अपनो को सुखद सरप्राइज खुशियों को दुगना कर जाते हैं।

इस साझा संकलन के खण्ड-1 में एक कहानी को पूरा करने वाले चार रचनाकार भी हैं। तो ठिठोलियों और यादों के गुलदस्ते भी, परम्पराओं की बातें भी है और तीखे व्यंग्य भी जो सोच को झकझोरते हैं साथ ही खण्ड दो में है होली पर अन्तरा शब्दशक्ति परिवार के सदस्यों के नामकरण और नामों को पिरोकर बनाई गई काविताएँ भी।

आशा है ये छोटा सा प्रयास और सरप्राइज सिर्फ शामिल रचनाकारों को ही नहीं पाठकों को भी पसंद आएगा।

इसी कड़ी में होलिका दहन पर समर्पित मेरी पंक्तियाँ!

काश!
आत्मा की साक्षी से
आत्मपरीक्षण की अग्नि में

मन की सारी बुराईयों को

होलिका बना पाते,....!

और

बिठा पाते

अच्छाईयों को

प्रहलाद बनाकर

उसकी गोद में,..!

और

भस्म हो जाती

होलिका

शेष रह जाता

प्रहलाद,...!

तब

प्रहलाद रूपी

इस निर्मल मन पर

जिंदगी के रंगों की छटा

निराली होती,...!

और

य़े होली भी,...

पर ये अग्निपरीक्षा

बहुत मुश्किल है,

है ना,...!!!!!!

डॉ. प्रीति सुराना

संस्थापक

अन्तरा शब्दशक्ति

वारासिवनी (म. प्र.)

481331

मो. 9424765259

खण्ड-1

अन्तरा शब्दशक्ति में होली की खिचड़ी

बबिता चौबे ने रची एक अनोखी कहानी

अन्तरा शब्दशक्ति ग्रुप में रंगों की बहारे थी बहुत से रंग लाल हरे पीले नीले । स्नेही, प्रेमी,तो कुछ ममतामयी रखे हुए थे। सबने सोचा क्यो न ग्रुप से ही रंग चुराकर होली मनाई जाए तो देखिए बड़ी बड़ी हस्तियां रंग चुराने के लिए कैसे आई।

प्रीति जी, रंग हाथों में छुपाए हुए सबसे छुप रही थी। तभी कीर्ति जी भी झोला लिए आ गई रंग बटोरने। प्रीति जी नजर टिकाए हुए थी कि कीर्ति जी थैला लिए है वो मुझ अधिक रंग उठाएगी।

दोनो में होड़ थी मन में।

तभी समकित जी भी हाय हल्लो करते आ गए।अरे प्रीति कितना रंग इकठ्ठा किया कल दुकान लगानी है न।
प्रीति जी ने मुठ्ठी दिखा दी। सीधी सरल सी चोरी करने आई और खाली हाथ।

बस इतना उफ! इतने में तो मोहल्ले के लोगों को टीका भी नही लग पायेगा। वैसे भी कितनी मंहगाई है। मैं सोच रहा था

थोड़ा-थोड़ा भी उठाती तो कम से कम त्यौहार हो जाता। इधर कीर्ति जी थैले भरने में लगी थी।

उधर बाहर भी खटर पटर की आवाज आई।

पिंकी जी भी गुलाल बटोरती नजर आ रही थी। ग्रुप में सभी जुगाड़ में लगे थे। इधर कृति जी की नींद खुली उफ सब लूट लिया रे मैं सोती रही और वो भी बोरी लेकर दौड़ी।

आभा जी सीधी साधी बैठी चाय की चुस्की भरकर मुस्काई लूटो बेटा पर ग्रुप के दरवाजे की चाबी मेरे पास है एक को भी निकलने न दूँगी।

भारती जी लिखने में व्यस्त थी तभी आवाजे कान लगाकर सुनने लगी ऐ.... चोरी से रंग ले जा रहे है ये लोग में भी क्यो पीछे रहूँ लेखन तो कल भी हो सकता है और अपनी जेबें भरने लगी गुलाल से।

मंजू जी भी टुकुर टुकुर चश्मे से सबको वॉच कर रही थी सबके थैले तो मैं ही छीनुगी लगे रहो।

आदिति जी होली के पकवान में व्यस्त थी उन्हें भी छीके आने लगी और टहलने बाहर आई तो देखा ओय सब कहा और वो भी ताकने लगी सबको।

पूनम जी लगी थी भांग घोटने कितनी अच्छी है न सबकी सोचती रहती है। मैंने पूछा जीजी आप यहाँ भांग में व्यस्त वहाँ सब रंग चोरी कर रहे। वो कम कहा थी बोली करने दे रे एक एक गिलास में पिलाऊंगी सब लुटक जायेगे। फिर रंग अपने। मैं मुस्कुराई।

देवयानी जी भी बड़ी तेज निकली उन्होंने दो कुत्ते खूंखार से ग्रुप के द्वार पर बांध दिए मैंने पूछा बहन यह होली में क्या कर रहे। वो बोली यही सब करेंगे.....थैले.....हाहाहा.....!

सुधा जी भी क्या कम थी बोली बटोरो बेटा मैं चुपचाप हूँ अभी तुम लोगों के पीछे मधुमख्खी न छोड़ी तो कहना। सब सयाने थे। मेरी दाल कहीं गलती नजर नही आ रही थी। तो दुबक कर भाग ली रंग खरीदने। क्योकि चुराने तो मैं भी गई थी पर जुगाड़ नही लगी।

आगे का हाल साधना जी से सुने।

"इतनी देर में पूनम जी की भांग भी पिस गई।ठंडाई में मिलाया और गिलास में भरकर ले आईं। पिंकी जी लग गई काम पर सबने पूछा भांग तो नहीं मिलाई। मुस्कराकर बोलीं अरे में तो कोसों दूर रहतीं हूँ इससे। फिर क्या,,,। अब सबको धीरे-धीरे असर होने लगा।

सबने कीर्ति जी का पहले थैला छुड़ाया, सारा रंग एक-दूसरे पर। बेचारी कृति सोते-सोते उठकर भागी रंग चुराने। जल्दी-जल्दी में फटी बोरी ही उठा लाई। जितना रंग बटोरा वो भी एक बराबर।सबने रंग चुराना छोड़ वहीं एक-दूसरे पर लगाना शुरू किया, और फिर प्रीति जी, कीर्ति जी, भारती जी, मंजु जी कृति

ने सोचा रंग तो मिला नहीं, क्यों न अदिति की रसोई पर धावा बोला जाये,पिंकी जी ने ठंडाई तो पी नहीं थीं, बस सबकी बात सुनकर पहले ही रसोई में दौड़ लगा दी। कुछ गुझिया साडी के पल्लू में, कुछ रसोई के एक डिब्बे में,,,।

तब तक सब लोग पहुँच चुके थे, तो डिब्बे को छोड़ा एक तरफ और दरवाजे के पीछे छुप गईं।

और फिर अब सब अदिति के पकवानों पर हाथ साफ़ कर रहे थे।

अब आगे की कहानी कीर्ति जी से सुने।

तभी थोड़ा रंग चुराकर बबिता भी लौट आई किसी को रंगने का मन बना कर। भला सखियों की इस धमा चौकड़ी में बबीता जीजी कहाँ बचने वाली थी, जैसे ही सब ने उनको घेरा वे इंजेक्शन निकाल कर सबको डराने लगीं बोली- "रंग लगाया तो सुई लगा दूंगी" बस फिर क्या था पीछे से पूनम जी ने दोनों हाथ पकड़कर पिला दी भांग वाली ठंडाई। बबीता को रंगने सभी दौड़ पड़े। तब तक रंग के साथ भंग भी चढ़ गई बबीता को तब वो बोली। कहाँ है ढोलक,.... ले कर आओ और ढोलक की थाप पर जो फाग गाना शुरू किया तो केवरा जी, साधनाजी, सीता जी,

अंजू जी, नवनीता जी सभी सुर में सुर मिलाने लगी और फिर क्या था कृति, पिंकी,अदिति, प्रीति सभी झूम झूम कर नाचने लगी सभी को नाचते देख हेमंत जी, विफल जी, गणतंत्र जी, नवीन जी, विवेक जी, जयकृष्ण जी, समकित जी सभी दौड़े आए और साथ मे थिरकने लगे!

सभी हैरान थे!! अंतरा की इस अनूठी होली को देख कर सभी अन्तराई इसी तरह हँसते मुस्कुराते रहे और होली पर सभी को रंग भरी शुभकामनाएँ देते रहे।

अब आगे की कहानी पूनम (कतरियार) ने बताई।

ढोल-मंजीरे और फाग के गीतों और ठुमकों ने हमारे अंगना ऐसा समां बांधा कि, मुहल्ले वाले भी नहीं बच पाये। और सभी अलग-अलग रंगों में रंगे हमारे घर आ धमके। कोई पहचान में नहीं आ रहा था कि, कौन किस परिवार से हैं? अलग-अलग रंगों में भी सभी एक ही दिखाई दे रहे थे और होली का मजा लेते हुए, होली को सार्थक कर रहे थे.अचानक विभिन्न रंगों में रंगे, मोरपंखी लगाये, किसी ने कान्हा का वेश धारण कर मुरली बजाना शुरू किया। अब भला कान्हा होली खेलें और राधा-रानी नहीं आती?

कोई घूंघट काढ़े, चुनरी लहराते राधा भी आ गई। रंग और भंग की मस्ती चार गुना हो गई। मस्ती के इस तरंग में प्रीति को ध्यान आया... अरे, समकित कहां है? इन रंगों में तो कोई पहचान में नही आ रहा। आखिरकार उन्होंने अपनी परेशानी पिंकी से शेयर की। लेकिन पिंकी तो समाधान बताने की जगह खुद ही परेशान हो गईं कि डाक्टर साहब लेने आनेवाले थें, वे कहां रह गये? एक ही साथ दोनों के दिमाग में बिजली सी कौंधी-अरे, ये 'कृष्ण' कहीं मेरे वाले तो नहीं हैं? और,... इनके संग ये राधा कौन ठुमक रही है? औरतों के पेट में भला बात कहाँ पचती है? अब तो सभी सखियां अपने अपने 'किसना' को उस मोरपंखी में ढूंढने लगीं। अफरा-तफरी में कोई कान्हा की वंशी झपटने लगीं तो कोई मोरपंख! इधर, राधा के घूंघट ने हेमंत जी, विफल जी , गणतंत्र जी आदि अन्य सभी कवियों और पतियों के भंग के तरंग में इजाफा कर दिया। सभी को राधा के ठुमके और नटखट अंदाज खींचे जा रहे थे। ऊहापोंह की इन्हीं पलों में कान्हा के आंख में गुलाल चला गया। सहज मानवीयता से प्रेरित सभी सखियां कान्हा के नैनों से गुलाल निकालने की जुगत में जो पलकों को खोला तो दंग रह गयीं.... वहां समस्त ब्रह्माण्ड में हो रही होली की झलक दिखाई पड़ी। विस्मय और श्रद्धा से सबके हाथ जुड़ गयें और पलकें नमित हो गई। क्षणांश में आँखें खुली तो, मोरपंखी कान्हा और घूंघट

वाली राधा अदृश्य हो चुके थे। हाँ सच, मानो न मानो, हमारी होली में इस बार जो तरंग बही कि ब्रज समझकर कान्हा और राधा भी हमारे साथ 'होली' खेलने से बच न सके!

ऐसी मनभावन होली की समस्त अंतरा-होली हुड़दंगियों को रंगीन शुभकामनाएँ।

बुरा न मानों होली है क्योंकि ये इनकी मिलीभगत है

बबिता चौबे,

साधना छिरोल्या,

कीर्ति वर्मा

और

पूनम (कतरियार) की।

होली में भांग का कमाल

रागिनी की शादी के बाद पहली होली थी। मायका बहुत दूर होने की वजह से होली दिल्ली में ही मनानी पड़ी।रमेश ने अपने सारे दोस्तों को होली पर आमंत्रित किया। रागिनी को सभी के खाने का इंतज़ाम करने बता दिया। रागिनी ने सुबह ही फटाफट काम निपटाया और रंग गुलाल की व्यवस्था में लग गई।

रमेश के सभी दोस्त सपत्निक पधारे। उधर रमेश ने ठंडाई का भी इंतज़ाम कर रखा था। सभी ने होली आनंद पूर्वक शालीनता से होली खेली। थोड़ी देर बाद रमेश ने रागिनी को इशारा किया रागिनी सभी के लिए जलपान ले आई। अब तो गरमागरम नाश्ते के साथ ठंडाई का मजा ले रहे थे। अचानक रमेश के दोस्त नितिन को शैतानी सूझी उसने कहा यार होली कुछ फीकी फीकी लग रही है जब तक रंग में भंग न हो मज़ा नहीं आता। उसने जाकर ठंडाई में भांग मिला दी।

रमेश के मना करने के बाद भी नितिन ने रागिनी को भांग मिली ठंडाई पिला दी। अब तो नज़ारा देखने ही लायक़ था।

रागिनी की ठंडाई पीते ही जो हालत हुई उसे देख कर सभी हँस हँस कर लोट पोट हो रहे थे। रागिनी बार बार छत की दीवार से बाहर पैर निकाल कर कूदने लगती रमेश उसे पकड़ कर लाते फिर थोड़ी देर में वो वहीं जाकर कूदने लगती। सभी का हँस हँस कर बुरा हाल पर रमेश की हालत ख़राब हो रही थी रागिनी को देख कर।

रागिनी की जब भांग उतरी और रमेश ने उसे सारी बातें बताई तो रागिनी तो शर्म से लाल हो गई।

अदिति रूसिया, वारासिवनी

फ़ोन के बहाने होली की हुड़दंग

संगीता की शादी पक्की हो चुकी थी अप्रैल में शादी थी। इस बार संगीता की मायके की आख़री होली थी। संगीता के पति के फ़ोन बग़ल वाली भाभी अमृता के घर आया करते थे। इसलिए रोज़ ही संगीता का आना जाना लगा रहता था और वैसे भी उसकी अमृता से बहुत पटती भी थी। इसी बात का फ़ायदा उठाया अमृता ने।

होली के दिन संगीता को बच्चों को भेज कर ये कह कर बुलाया की फूफाजी का फ़ोन आया है मम्मी बुला रही हैं जल्दी। संगीता भी बिना कुछ सोचे दौड़ लगा कर आ गई। जैसे ही संगीता अंदर आई अमृता और उसकी ननंद पिंकी ने दरवाज़े बंद कर दिए और संगीता को रंग से सराबोर कर दिया। साथ में संगीता का भाई भी आया था उसे भी सबने मिल कर रंग दिया अपने आपको बचाते बचाते बेचरा नाली में गिर गया। संगीता को अपनी नादानी ग़ुस्सा भी आ रहा था और हँसी भी।

अदिति रूसिया, वारासिवनी

होली के बहाने हुआ प्यार

ऑफिस में होली की धूम थी रंग, गुलाल, गुजिया की खुशबू, ठंडाई, पकौड़े, समोसे और होली के गीत पर थिरकते कई लोग।

ऐसे में रिया ने देखा पूरे ऑफिस में अलग-थलग तन्हा सा बैठा था संजीव क्योंकि उसे होली खेलना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। सबने कितनी मिनते की शामिल होने की पर वो फिर भी अपनी सीट पर बैठा ही रहा।

रिया की न जाने क्यों न चाहते हुए भी नज़र संजीव पर ही टिक जाती।

और न जाने फिर क्या मन में आया दबे पांव जाकर पीछे से संजीव को बिना पता चले उसके गालों पर गुलाल लगा दिया और जैसे ही वो पलटा उसके मुँह में गुजिया डाल दी। दोनों ने एक दूसरे को देखा और यूँ होली के रंग से सरोबार दोनों के दिलों में खिल उठी प्यार की पहली फुहार।

मीनाक्षी सुकुमारन
नोएडा (यू.पी)

होली की मस्ती

हमारे चाचा को होली खेलने का शौक बहुत ज्यादा था वह अपने सभी जान पहचान वालों को होली में नये नये तरीके से परेशान करते थे। सभी लोग उनसे होली खेलने से कतराते थे। होली के पहले उनकी सगाई तय हो गई थी शादी होली के बाद होनी थी।

सभी दोस्तों ने मिलकर योजना बनाई और उनकी मंगेतर को होली खेलने आने के लिए तैयार कर लिया। यह बात चाहिए चाचा जी को नही बतलाई चाचा जी ने अपने स्वाभाव के अनुरूप गढढा गोद कर रंग भर दिया।

चाचा के वहाँ से हटते ही दोस्तों ने उस रंग में गाय का बदबूदार गोबर मिला दिया और ठड़ाई में बहुत सारी भांग मिला कर चाचा को पिला दी।

भांग के नशे में सबने मिलकर चाचा को गढढे में डाल दिया भांग के नशे में चाचा ने अपनी मंगेतर को गड्ढे में दबोच लिया और प्यार करने लगे।

सभी दोस्त यह देखकर बहुत चटकारे ले लेकर हंसने लगे। उनकी मंगेतर शर्म सार हो रही थी चाचा को कोई फर्क नहीं पड़ते देख वह गुस्से से दोस्तों का सहारा ले कर बाहर आ वापस चली गई। नशा उतरने पर चाचा को बहुत बुरा लगा उन्होंने अपनी मंगेतर से माफी मांगी।

उनकी मंगेतर ने इस शर्तें पर माफी दी की वह हंसी खुशी उल्लास से होली खेलेंगे। किसी को न जबरदस्ती रंग लगायेंगे न तंग करेंगे

मंजू सरावगी

रायपुर छतीसगढ़

होली हुड़दंग और परंपराएँ

होली की परंपराएँ अधिक भाती रहीं होली के हुड़दंग की अपेक्षा, इसलिए रंगों से सराबोर होते हुए दूसरों को ही देखा। बचपन में अवश्य अपनी सहेलियों के साथ रंगों से खूब रंगा दूसरों को। पिचकारी आती, बाल्टी में रंग घोलते। लाल रंग घोलते, नील से नीला रंग बनाते और पिचकारी भर-भर आते-जातों को भिगोते रहते। बचपन गया तो जैसे रंगों से नाता टूट गया, क्योंकि रंग लगाने के नाम पर होने वाली विकृतियाँ मन में क्रोध पैदा करने लगी थीं। तब मैं तो होली पर बाहर नहीं निकलती थी। मैं और पापा घर बंद कर तब तक घर में रहते जब तक होली का हुड़दंग समाप्त न हो जाता। माँ को लेकिन बहुत उत्साह रहता था। वे अपनी सहेलियों के साथ मोहल्ले में घूमती और रंगों से सराबोर होकर घर पहुँचती। रगड़-रगड़ कर रंगों को छुड़ाने-नहाने का कार्यक्रम चलता। पर मुझे जो भाता वो था मठरी, शकरपारे, नमकपारे बनाना। वो मैं माँ के संग बनवाती भी थी, साथ में हमारे

पापा भी लग जाते थे। गुझिया बनानी मुश्किल लगती थी, वो माँ और पापा मिलकर बनाते थे। गाजर की कांजी सबको अच्छी लगती, मुझे सबसे ज्यादा तो मैं ही उसे शौक से बनाती थी। होलिका दहन वाले दिन माँ व्रत रखती थी। बेर-मखानों, किशमिश की माला बनाते, गोबर के छोटे-छोटे कंडों की माला दो-चार दिन पहले ही बना कर सुखा ली जाती। होलिका की पूजा करने माँ के साथ मैं जाती थी। एक थाली में आटा, गुलाल, हल्दी, कच्चे सूत का धागा परिक्रमा के लिए, दीये में घी डाल कर, माचिस रखते, लोटे में जल लेकर जाते। माँ ख़ूब अच्छी साड़ी पहनती। तब जहाँ होलिका जलाने के लिए लकड़ियों का ढेर लगाया होता वहाँ जाकर माँ ज़मीन पर जल छिड़क कर थोड़ी सी जगह को साफ़ करती, वहाँ आटा, गुलाल, हल्दी चढ़ाते, दीया जलाते, होलिका को टीका लगाते, गोबर के कंडों की माला चढ़ाते और एक हाथ में कच्चा सूत और दूसरे में जल का लोटा लेकर माँ होलिका की

परिक्रमा करती। सूत लपेटती जाती और थोड़ा-थोड़ा जल गिराती जाती। पूजा करके लौटने के बाद घर आकर चाय पीते।

शाम को खाने में सब्ज़ियाँ, रायता मैं बनाती और पूरियाँ माँ बनाती। फिर एक सप्ताह तक अपनी खास आत्मीयता वाले परिवारों का एक-दूसरे के यहाँ होली मिलना चलता रहता था। यह तब तक चलता रहा जब तक मेरी नौकरी नहीं लगी। नौकरी लगने और विवाह के बाद हर त्योहार पर अरुणाचल प्रदेश से आ पाना मुश्किल होता था।

उस समय की होली हमारी ऐसी हुआ करती थी। स्वैच्छिक सेवनिवृत्ति लेकर जब देहरादून आए तो होली का नया आधुनिक रूप दिखा। जहाँ दिखावा अधिक और आत्मीयता बहुत कम थी। अपने मोहल्ले में पति को पुरुषों के साथ निकलना पड़ता और महिलाओं के साथ मजबूरी में मुझे भी निकलना पड़ता। बेटा तो अपने मित्रों के साथ निकल जाता पर बेटी मेरी जैसे मैं पहले घर में बंद रहती थी, उस तरह घर में बंद रहती। जब हम तीनों लौटते रंगे-पुते तो पहले हम फ़ोटो खींचते। मुझे पलों को फ़ोटो द्वारा संजोने का बहुत शौक है। इन स्मृतियों के सहारे मुझे जीवन जीना

बहुत अच्छा, सुखमय और राहत भरा लगता है। शाम को जिन घरों में मृत्यु होने के कारण त्योहार नहीं होता वहाँ गुझिया, मठरी आदि अन्य चीज़ें देने जाते।

मोहल्ले के यही चलन है। हाँ महिलाओं की एक विशेषता है कि रंग लगाते समय बेवक़ूफ़ियाँ करने में वे भी पुरुषों से पीछे नहीं।चेहरे पर रंग कम, बालों में और कपड़ों के अंदर अधिक डालती हैं और स्वयं बालों में मेहँदी लगा कर आती हैं। इसी से बचने के चलते एक बार तो मैंने तबियत ठीक न होने का बहाना बना लिया था और घर से बाहर ही नहीं निकली थी। होलिका पूजन यहाँ कोई करता नहीं, बस रंग वाले दिन रंगो-पुतो, नाचो-गाओ, पुरुषों को मदिरापान कर लड़खड़ाये बिना होली लगती नहीं।

इस बार बीस परिवारों को मिला कर सामूहिक होली मनाने का बीड़ा मेरे पति ने उठाया है तो देखना है अनुभव कैसा रहता है.....यह तो कल ही पता चलेगा।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई, देहरादून उत्तराखंड

मठरियाँ
(हास्य कथा)

दरवाजे पर आहट हुई। खोला तो देखा श्री व श्रीमती शुक्ला थे।

मन में चिंता हो गई चाय के साथ रखूँगी क्या? बाजार जा नहीं पाई थी कि कुछ रखने को होता। फिर सोचा कि चलो ये तो वैसे भी स्वास्थ्य के प्रति अतिरिक्त सचेत रहने वालों में से हैं, खायेंगे तो हैं नहीं।

तो वो मठरियाँ जो जल्दी में बिना मोयन डाले बन गई थी होली पर, वही रख दूँगी... सोचते हुए मुस्कुरा कर उनका स्वागत किया।

इधर-उधर की बातें करते-कराते मैंने चाय बना कर साथ में वो स्पेशल मठरियाँ रख दीं।

पर ये क्या...? उन्हें खाते ही शुक्ला जी के दो दाँत टूट कर नीचे आ गिरे।

मैं किंकर्तव्यविमूढ़, चुपचाप, देखती ही रह गई कि श्रीमती शुक्ला की आवाज कानों में पड़ी..." बधाई हो शुक्ला जी! अरे भाभी जी! आपकी इन मठरियों ने तो हमारी समस्या ही हल कर दी। इन दो दाँतों के लिए कब से डॉक्टर चक्कर पे चक्कर कटवा रहा

था आज नहीं कल। हमें क्या पता था कि आपके यहाँ आते ही समस्या यूँ चुटकियों में सुलझ जाएगी।

मैंने राहत की साँस ली। पति और बच्चों को ये घटना बता ही रही थी कि दस बजे के लगभग दरवाजे पर फिर आहट हुई। रात का समय! सोचा, पता नहीं किस पड़ोसी को इस समय क्या जरूरत पड़ गई?

दरवाजा खोला तो तिवारी जी खड़े थे। बोले...." भाभी जी!

मठरियाँ लेने आया हूँ। ना नहीं कीजिएगा। वो शुक्ला भाभी जी ने बताया था कि भाई साहब की समस्या हल हो गई है। इधर मंजू की दाँत की समस्या ने भी परेशान कर रखा है। प्लीज भाभी जी! जल्दी ले आइए और सारी दे दीजिए ताकि हम भी निजात पाएँ।"

अभी उन्हें मठरियाँ पकड़ा कर बैठी हूँ और सोच रही हूँ कि अब दरवाजे पर फिर कोई आहट न हो जाए.... क्योंकि मठरियाँ तो सारी तिवारी जी ले गए हैं।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई
देहरादून उत्तराखंड

होली की पाती

प्रिय राधा,

जानता हूँ, ये तुम्हारा नाम नहीं, किन्तु तुम किसी औऱ की हो औऱ मेरा जीवन भी किसी औऱ का हो चुका है। हमारे स्नेह-बंधन को केवल यही परिभाषित कर सकता है

यूँ तो तुम्हारा स्थान मेरे जीवन में वैसे भी अति विशिष्ट है, पर होली पर तो ये अपरिवर्तनीय हो जाता है। विगत कई वर्षों से तुम ही एकमात्र हो जो आलू चिप्स औऱ पापड़ के प्रति मेरे प्रेम को समझती हो।

मेरी ये अतृप्त पिपासा सदैव तुम्हारे हाथों ही बुझती आई है। मैं जानता हूँ कि मात्र मेरे होठों पर एक मुस्कान देखने की तुम्हारी इच्छा ही तुम्हें चिप्स औऱ पापड़ बनाने के लिए प्रेरित करती है। अन्य कोई भी मेरे लिये ये नहीं करता, इसीलिये ये स्नेह प्रगाढ़ औऱ बंधन अटूट है।

होलियाँ तो सखी तुम्हें बिना रंग लगाए ही निकल जाती हैं। परन्तु जब तुम्हारा बनाया हुआ चिप्स उठाता हूँ तो लगता है

मैंने तुम्हें छू लिया औऱ तुम्हारे गालों को गुलाल से औऱ अधिक गुलाबी कर दिया हाँ, सचमुच मेरी खुशी देखकर मैंने तुम्हें गुलाबी होते अनुभव किया है। हमारा होली मिलन तो संभव नहीं पर उस पापड़ के बहाने मैं तुम्हें अपने भीतर समा लेता हूँ।

इतना सब कुछ तुमसे कह पाना भी दुस्साहस ही लगता है, पर अच्छा ना लगा हो तो होली की ठिठोली मान कर क्षमा कर देना, औऱ यदि लगा हो तो फिर देर किस बात की, मैं जानता हूँ, चिप्स/ पापड़ तो तुमने मेरे लिए बना ही रखे हैं, बस बुला लो मुझे... सपरिवार,...!

-पंकज जौहरी

होली का हुड़दंग

हमारे यहाँ बहू पहली होली ससुराल में नहीं पूजती, बल्कि मायके में पूजती है।दामाद भी पहली होली अपने ससुराल में मनाता है। पतिदेव को होली खेलने के लिए आने का निमंत्रण मिला।मायके में हमारे पिताजी का यह हाल था कि हमें कभी छज्जे में से भी झाँकने नहीं दिया की होली का हुड़दंग कैसा होता है? कमरे में ताला लगाकर हम सारे बहन भाइयों को बंद कर देते थे। कोई कितना भी दरवाजा खटखटाए, मजाल है कि दरवाजा खोल दें। दामाद ने आना था तो मजबूरी थी, लेकिन मेरी छोटी बहनों को कमरे में ही बंद कर दिया था... जैसे कि जब बड़ी बहन की होली थी तो हम चारों बहनों और तीनों भाइयों को कमरे में बंद कर दिया था। शुक्र है कि मेरे मामा जी की दो बहुएँ आई हुई थीं और उनको पूरी छूट थी कि जो मर्जी करें।हमारी माँ हमारी भाभियों की तरफ थीं। पिताजी तीसरे माले पर अपने *शांतिभवन* में आराम फरमा रहे थे। मेरे जीजा जी को अपनी पहली होली का अनुभव था, जो उन्होंने मेरे पति के साथ शेयर किया।बताया कि पहले तो खाने-पीने से आवभगत होगी। उसके बाद होली की आवभगत होगी। लट्ठमार होली होगी। लट्ठ मैं ले आऊँगा। बस तुम्हें कोलड़े पड़ने से अपने आप को बचाना है और लट्ठ चलाकर कोलड़े को रोकना है।

हमारी भाभियों ने मिलकर न जाने क्या-क्या योजना बनाई। मेरी छोटी बहन को गेट के ऊपर परछत्ती बनी हुई था, उस पर रंग की बाल्टी लेकर तैनात कर दिया।

"दीदी! जैसे ही जीजा जी अंदर घुसें, उन पर यह बाल्टी उलट देना।"

कच्चे सूत से चारपाई बुनकर उस पर दरी बिछाई और चादर बिछा दी।ज्योंही पतिदेव दरवाजे पर पहुँचे, ऊपर से खूब गहरे रंग के पानी की बरसात हुई। साथ में उनके भाई भी थे। माँ ने दिखावे के लिए डाँट मारी, "अरे!अरे! यह क्या कर दिया? अभी कुछ खाया भी नहीं था कि पहले ही भिगो दिया।"

भाभी ने बड़े प्यार से कहा- "अरे जीजा जी! दीदी का तो दिमाग खराब है। चलो कोई बात नहीं। आप यहाँ चारपाई पर बैठो।"

जीजा जी बैठे। चारपाई टूटी और जीजा जी चारों खाने चित्त। चारपाई के बीचों-बीच... हाथ और पैर दोनों ऊपर... अब जैसे तैसे दोनों भाभियों ने उनको बाहर निकाला।

"अरे! अरे! जीजा जी! चोट तो नहीं लगी? यह चारपाई ना आपका बोझ बर्दाश्त नहीं कर पाई। चलो छोड़ो, अब यहाँ सोफे पर बैठो। आपके लिए गरमा- गरम पकौड़े बनाकर लाते हैं।"

पकौड़ों में इतनी मिर्ची डालीं, इतनी मिर्ची डालीं कि आँख और नाक से पानी बहना शुरू...
मुँह से भाप निकलने लगी...

माँ ने डाँट मारी "कमबख़्तों! यह क्या किया? इतनी ज्यादा मिर्च डाल दीं?

"हाय- हाय जीजा जी! मुँह जल गया? अरे यह भाभी की शरारत है।" छोटी भाभी बोली। "मैं ना अभी आपके लिए बर्फी लेकर आती हूँ। "बर्फी साबुन से बना रखी थीं।बर्फी खाईं तो मुँह और भी कसैला हो गया। सड़ा सा मुँह बनाया तो फिर भाभियाँ हँसकर बोलीं, "क्या हुआ जीजा जी! अब क्या आपको मिठाई भी अच्छी नहीं लगी?"

"यह बर्फी किस चीज़ की बनाई है?"

"बर्फी तो खोए की ही बनती है जीजा जी।"

"पर यह तो खोए की नहीं है।मुँह का स्वाद ही बिगाड़ दिया है।"

"पता नहीं जीजा जी! आप कहाँ खोए हुए हो? चलो अब आपने खा पी लिया ना।अब आ जाओ आँगन में।आ जाओ। कमर कस लो होली खेलने के लिए तैयार हो जाओ।"

"हाँ,हाँ ! आओ,आओ! हम भी कौन सा किसी से कम हैं? आ जाओ मैदान में।देखते हैं कौन किसको हराता है।"जीजा जी

और पतिदेव दोनों ही एक साथ बोले और दोनों ने पूरी तरह से कमर कस ली, क्योंकि उन्हें मालूम था कि छिताई केवल दोनों जीजाओं की होनी है।उनके भाइयों को कोई कुछ नहीं कहेगा। भाभियों ने खूब कसकर कोलड़ा बनाया। उसके अंदर पत्थर भी भर लिए।अब जो हुड़दंग मचा, जो हुड़दंग मचा कि कुछ ना पूछो।भाभियाँ पूरी कोशिश कर रही थीं कि अच्छे से कूट दें, मगर दोनों साढू भाई भी कौन सा कम थे। दोनों लट्ठ से पूरा मुकाबला कर रहे थे और वार से बच रहे थे। बड़ी देर हुड़दंग होता रहा। दोनों छोटी बहनें तो डर के मारे सामने ही नहीं आईं। इतना ही काफी था कि ऊपर से पानी डाल दिया था। यदि उन पर उनके जीजा रंग लगा देते तो उनकी शामत ही आ जाती, क्योंकि बड़ी बहन की शादी में जब जीजा जी होली खेलने आये थे, तब यह सब कुछ हो चुका था। हम बहनों ने होली बिल्कुल नहीं खेली।हम तीनों बहनें बिल्कुल भी सामने नहीं आई थीं। दरवाजा बंद करके बैठी हुई थीं। जब होली खेल चुके और नहा धो लिए ,तभी हम बहनें बाहर निकली थीं और खाना खिलाया था। खाने के बाद छत पर बैठकर मैं और मेरी बहन बर्तन साफ कर रही थीं कि जीजा जी फलाँगते हुए छत पर आए। पीछे- पीछे हमारे मामा की दोनों बहुएँ भी कोलड़ा थामे आईं। जीजा जी ने हम दोनों बहनों पर रंग लगाया। भाभी ने कोलड़ा मारा। जीजा जी ने रोकने की कोशिश थी। वह कोलड़ा पलटकर बहन के मुँह पर लगा और उसका एक

दाँत टूट गया। कोई गलती न होने के बावजूद भी पिताजी से बेहिसाब डाँट पड़ी।

जब छोटी बहन का विवाह हुआ, तब छोटे दामाद को भी होली खेलने के लिए बुलाया गया।अब तीन दामाद इकट्ठे हो गए।नए दामाद के साथ उनके कुछ दोस्त और भाई आए थे।उन बेचारों को कोलड़े का बिल्कुल भी अनुभव नहीं था, हालांकि दोनों साढ़ू भाइयों ने अच्छी तरह समझा दिया था, फिर भी वो कोलड़े के वार से खुद को बचा नहीं पा रहे थे।कितनी ही जगह लाल-नीले पीले हो गए। उनकी माँ ने कहा- (जो मेरी बहन ने बाद में बताया) कि "अब कभी भी वहाँ होली खेलने जाने की जरूरत नहीं है। क्या मेरे छोरे को मार-मार कर नीला-पीला कर दिया है।15 दिन से रोज सिंकाई कर रही हूँ और अभी तक ठीक नहीं हुआ। आगे से होली वाले दिन तो वहाँ बिल्कुल ही नहीं जाना। सबसे छोटे बहनोई तो डर के मारे होली खेलने ससुराल गए ही नहीं।

--राधा गोयल

प्रीत का रंग

अभी एकता नहा कर निकली ही थी, कि द्वार पर घण्टी बजी। ये सोचते हुए कि दोपहर को तीन बजे हैं, होली के दिन इतनी देर से कोई रंग तो खेलने नहीं आया होगा वो दरवाज़ा खोलने उठी पर फिर भी डरते हुए उसने दरवाज़ा खोला और जैसे ही एकता ने अपनी चचेरी बहन और जीजाजी को देखा तो झट पीछे हटते हुए कह दिया, "अभी नहा कर निकली हूँ, मुझे रंग मत लगाना।"

उसके जीजाजी ने मन ही मन कुछ सोचते हुए एक गहरी मुस्कान के साथ कहा,

"ठीक है साली साहिबा, क्यों परेशान होती हो, हम होली खेलने नहीं मिलने आये हैं, यहाँ से निकल रहे थे तो सोचा मिलते चलें।"

पर एकता को विश्वास न हुआ।

वो सोचने लगी कि दीदी जीजाजी होली के दिन आएँ और रंग न खेलें ये तो मुमकिन नहीं है क्योंकि वो जानती थी कि उसके जीजाजी होली बड़े जोश से खेलते हैं। क्या करूँ, कैसे बचूँ यही विचार करते हुए जब उसने देखा कि दोनों माँ पिताजी से बात करने में व्यस्त हैं वो किसी बहाने से रसोई में जाने के लिए उठ

खड़ी हुई। वहाँ तो रंगने से बच जाऊँगी, ये सोच वो "चाय बना कर लाती हूँ" ऐसा कह जैसे ही चली तो झट से जीजाजी ने उसको पकड़ लिया और दोनों पति-पत्नी ने मिलकर एकता को रंग दिया। एकता रुआँसी हो गयी। इतनी मुश्किल से रंग छुड़ाया था और अब फिर इतनी मशक्कत करनी पड़ेगी।
"जीजाजी आप भी न, जाइये नहीं बोलती आपसे।" ये कहकर स्नानघर में घुसने लगी तो उसके चेहरे पर कभी क्रोध के, कभी शर्म के, कभी झल्लाहट के भावों को देखकर उसके जीजाजी बोल पड़े, "साली जी, चाहे कितना भी झुंझला लो पर आपके चेहरे पर इन मिश्रित भावों की विभिन्नता में जो एकता दिख रही है न, वो प्रीत के रंग को नहीं छुपा पा रही।" ये सुन एकता भी मुस्कुराए बिना न रह पाई।

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

ससुराल में पहली होली

होली का त्योहार है और नई नवेली दुल्हन रीना की ससुराल में पहली होली ये सोचकर ही रीना बहुत खुश थी कि कितना अच्छा लगेगा सबके साथ होली खेलूँगी।

सुबह से ही बडे उत्साह से रीना ने सास ससुर के चरण स्पर्श किये और सबको होली की बधाई दी, देवर और ननद ने रीना को बताया कि हमारे यहाँ ये रिवाज है कि पहली होली पर घर की बहू को गोबर के कंडे बनाकर गाय को तिलक लगाकर एक देश भक्ति का गाना सुनाना पडता है तो भाभी आपको भी रिवाज को निभाना पडेगा।

ये अजीब सी रिवाज सुनकर रीना का सारा उत्साह जाता रहा और रूहासी होकर अपने कमरे में चले गई फिर एक पुरानी सी साडी पहनकर बाहर आयी और अपनी ननद से बोली, बताईये दीदी गोबर के कंडे कहाँ बनाऊँ?

और सबने एक साथ हंसकर रीना के ऊपर रंग डालकर बोले,...बुरा न मानो होली है,...!

मीना विवेक जैन

बंदरों की होली

भांग की गुजिया, रंग, पिचकारी, सब्जियां, दही, पनीर, सब एक जगह सामान रखा हुआ था।

जो कुछ देर पहले माँ बाजार से लाई थी,... माँ अभी उठाने की सोच ही रही थी कि खूब सारे बंदरों की एक टोली आई और उसमें से भांग की गुजिया और रंग उनके हाथ में पड़ गया।

छत पर जाकर पहले भांग की गुजिया खाई फिर पानी की टंकी में खूब उछल उछल कर स्नान किया क्योंकि रंग भी खोल डाला था सो टंकी का सारा पानी लाल हो चुका था और पूरी छत रंग से सराबोर थी थोड़ी देर में उन्हें नशा भी आ रहा था सारे के सारे बंदरों की टोली पूरे 6 घंटे छत पर आराम से सोई पहली बार देखा इंसानों के साथ बंदरों ने खूब बढ़िया होली खेली...।

ललिता नारायणी

रंगीला सरप्राइज

रमा के पैर तो आज जमीन पर ही नही पड़ रहे थे। आकाश जो आ रहा था होली की छुट्टियों में घर। फूली नहीं समा रही थी रमा।सुबह से ही व्यस्त थी आकाश के पसंदीदा पकवान बनाने में।

पर एक फोन की घंटी से उस का सारा उत्साह धरा का धरा रह गया। आकाश का फोन था , सीमा में तनाव की वजह से उसकी छुट्टियाँ रद्द कर दी गई थी। बेचारी रमा का तो मन ही नही लग रहा था किसी काम मे। बस रोये जा रही थी।

तभी बाहर से उसे नगाड़ो का शोर सुनाई दिया। कोई जोकर आया था। पूरा चेहरा रंग बिरंगे रंगों से रंगा हुआ था। रमा ने बाहर आकर देखा, तो जोकर तरह तरह के करतब दिखा रहा था। रमा को देख कर जोकर उसके पास आया, और उसे हसाँने की कोशिश करने लगा। कभी पेड़ पर चढ़ता, कभी बंदर की तरह छलाँग मारता, कभी बन्दर की तरह खुजली करता।

सभी का हँस हँस कर बुरा हाल था। रमा भी अपनी हंसी रोक नही पाई। वो भी जोकर की हरकतों पर खिलखिलाकर हँस पड़ीं। तभी किसी ने ऊपर से जोकर के ऊपर बाल्टी भर पानी डाल दिया। सभी जोर जोर से ताली बजाकर हसँने लगे। तभी रमा की नजर उस जोकर के चेहरे पर पड़ी। अरे ये क्या! ये तो आकाश खड़ा था जोकर की जगह। तभी आकाश रमा के पास आकर जोर से चिल्लाया "सरप्राइज" और रमा के ऊपर ढेर सारा रंग गुलाल उड़ेलते हुए बोला "बुरा ना मानो होली हैं"। रमा तो खुशी से पागल हो गई आकाश को इस तरह देख कर। उसने भी आकाश को ऊपर से नीचे तक रंग बिरंगा कर दिया। इस बार रमा की होली रंग बिरंगे रंगों से सजी हुई थी।

निधि रूसिया बड़ेरिया

बैकुंठपुर

भांग का असर

शुक्ला जी के मित्र बनारस से आए हुए थे। होली का हुड़दंग था और भांग छन रही थी आज तो शुक्ला जी के मजे ही मजे थे। शुक्ला जी को दोस्त के आने के कारण हिम्मत आ गई थी। आज उन्हें अपनी पत्नी से डर नहीं लग रहा था इसलिए भांग तो पी ही सकते थे।

शुक्ला जी ने तीन-चार गिलास भांग पी ली। भांग का असर धीरे-धीरे होने लगा। उन्होंने जो हँसना शुरू किया तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। उनकी पत्नी भी उनके हँसने से परेशान हो गई। अपने धीर गंभीर पति को इतना हँसते हुए उन्होंने कभी नहीं देखा था। आज उनकी डाँट का शुक्ला जी पर कोई असर ही नहीं हो रहा था इसलिए वह और भी झल्ला रही थी।

तभी उन्हें एक शरारत सूझी और उन्होंने शुक्ला जी का वीडियो बनाना शुरू कर दिया। शुक्ला जी की सारी हरकतें वीडियो में कैद हो गई। शुक्ला जी की पत्नी को अब मजा आने लगा और वह खुद भी हंसते हुए उनकी तस्वीर भी खींचने लगी। उनके बेटे चिंटू ने अपने मम्मी-पापा को इस तरह पहली बार हंसते

हुए देखा था। उसने भी अपने मम्मी-पापा की वीडियो बनानी शुरू कर दी। ताकि उनको बाद में दिखा सके कि हंसते हुए कितने अच्छे लग रहे हैं वो लोग। तभी पड़ोस की आंटी गर्मा गरम पकौड़ी और नींबू का अचार लेकर आ गई। सभी खाने पर टूट पड़े।

धीरे-धीरे भांग का नशा उतरने लगा। शुक्ला जी के चेहरे के भाव भी बदलने लगे। वो पहले जैसे धीर गंभीर हो गए और उनकी पत्नी ने फिर से रौद्र रूप धारण कर लिया। शुक्ला जी फिर से भीगी बिल्ली बन गए । चिंटू अपने मम्मी-पापा के इस रूप को गौर से निहारने लगा।

आभा दवे, मुम्बई

प्रचार

रमेश सुबह से थैला लेकर घर से बाहर निकल गए। जहाँ भी वे जाते थैले में रखे हुए पर्चे सभी को बाँट देते। पर्चे बाँटकर उन्हें आत्मिक संतोष हो रहा था।

तभी उनकी मुलाकात अपने पुराने मित्र अजय से हो गई। अजय ने उन्हें देखते ही कहा " क्या बात है ये थैला लेकर कहाँ निकल पड़े ?"

रमेश ने गहरी साँस लेकर कहा "तुम्हें तो पता ही है जब भी होली आती है मुझे बहुत बेचैन कर जाती है।" अपनी बात आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अजय से कहा "आज दस साल हो गए मेरे बेटे सनी की आँख की रोशनी गए। अब वह बीस बरस का हो गया है। उसकी एक आँख इसी होली ने छीन ली उन्होंने दुखी होते हुए कहा।"

हाँ! मुझे याद है, जब सनी सभी बच्चों के साथ होली का रंग खेल रहा था। तभी उसके किसी सहपाठी ने शरारत करते हुए गुब्बारा उसे फेंक कर मारा था जिसमें पानी की जगह विषैला

लाल रंग भरा हुआ था। जो जोर से सनी की आँख पर लगा था उसे तुरंत अस्पताल ले जाना पड़ा था। अपने दिमाग पर जोर डालते हुए अजय ने कहा।

रमेश ने अश्रु भरे नेत्र से हामी भरी। थैले में से कुछ पर्चे निकालकर अजय को देते हुए कहा इसमें मैंने अपनी बेटे की कहानी के साथ सभी को हिदायत दी है कि "होली का रंग बदरंग भी हो सकता है संभलकर खेलें। आँखें बहुत कीमती है इसे सँभाल कर रखें।" सभी को होली मुबारक।

अजय को पर्चे देकर रमेश आगे बढ़ गए। अजय उन्हें जाते हुए देखता रहा और सोचता रहा लोगों को दर्द से बचाने का मौन प्रचार पहली बार देखा है।

आभा दवे, मुम्बई

होलिका दहन का अवकाश

शिखा के मनमें अंतर्द्वन्द चल रहा था......।

"कल होलिका दहन है, विभाग में सभी अवकाश पर रहेंगे, इच्छा तो मेरी भी है, पर कुलसचिव जी से अवकाश कैसे मांगू, क्योंकि मैं भी नहीं आई तो विभाग को बंद रखना पड़ेगा इसलिए अनुमति मिलनी तो मुश्किल ही है.......।

ऊपर से कुलसचिव जी दक्षिणभारतीय हैं जहाँ सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण होलिकादहन तो मनाने का रिवाज ही नहीं हैं, फिर होली का महत्व भी समझाना मुश्किल होगा। इसी उधेड़बुन में डूबी शिखा अवकाश का आवेदन लेकर पहुंची कुलसचिव के पास अपनी बात रखने।

बताया की "सर कल मेरा विभाग बंद रहेगा"

"क्यों भला सब कहाँ जा रहे..... घूमने कहीं क्या"

"नहीं सर वो कल होलिका दहन है ना तो सभी अवकाश ले रहे हैं, और मैं भी.....!"

"ओहो तो उत्सव है क्या आपके.. सभी उत्सव मनाएंगे.. अच्छा है....!" टूटी फूटी हिंदी में उत्साहित होकर हंसते हुए बोले..."अच्छा उत्सव है तो जाइए, बिल्कुल जाइए उत्सव मनाइए"

शिखा तो आश्चर्य चकित रह गई कि सर जानते हैं होलिका दहन मनाने की आवश्यकता और महत्व को.....।

शिखा का हृदय खुशी से झूम उठा और खुशी से सीढ़ियां उतरने लगी।

रचना उपाध्याय

बुरे काम का बुरा नतीजा

'प्रहलाद होलिका चोरी चली गये.......' पूरी कालोनी में बात दावानल की तरह फैल गई। जिसने भी सुना तो वो सकते में आ गया 'देर रात होलिका दहन है और दोनों प्रतिमा नदारत! ऐसा कौन हो सकता है जो प्रहलाद होलिका का ही अपहरण कर लेगा?' राजू को जब यह बात पता चली तो वह तुरंत समझ गया की यह काम किसका है। वो अपने दो चार दोस्तों के साथ पुलिस थाने गया वहाँ प्रतिमा चोरी की रिपोर्ट लिखाई उसने साफ-साफ शब्दों में कहा 'यह काम किसी और का नहीं बल्कि मुरारी लाल का ही है।'

मुरारीलाल जो पूरी कालोनी में सबसे खराब स्वभाव वाला व्यक्ति के नाम से बदनाम। न किसी से बोलचाल न ही किसी के घर आना जाना। हमेशा किसी न किसी से लड़ता रहता। मोहल्ले में कोई उत्सव होता तो उसे चिड़ होती, बच्चे खेलते तो उन्हें डांट कर भगा देता।

राजू को याद आया कल जब कालोनी के बच्चे उसके घर चंदा मांगने गये थे तब उसने उन सभी को बहुत बुरा-भला सुनाया और साफ हिदायत दी कि 'उसके घर के आस-पास दिखना भी नहीं वरना डंडा से मार-मार कर सबकी टांग तोड़ दूँगा और हाँ यहाँ

होलिका-भोलिका भी नहीं जमाना वरना.......।' कह उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया था।

खट...खट..खट...! दस्तक की तेज आवाज सुन मुरारीलाल ने अल्साते हुए दरवाजा खोला तो पैरों के नीचे से जैसे जमीन ही खिसक गई सामने राजू, मुकेश, सोहन, अनूप, सतीश, मनोज, नितिन आदि के साथ ही पुलिस व थानेदार सभी खड़े थे।

"आ...आप....आप....." थानेदार को देखते ही मुरारीलाल हकलाने लगा।"

'देखो आपके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज है कि आपने कालोनी में रखी प्रहलाद होलिका की प्रतिमा चोरी की है।" एक पुलिस ने कहा।

"वो देखिए सर वो रखे है प्रहलाद होलिका।" मुकेश तखत के नीचे छुपी प्रतिमा देखते ही चहक पड़ा।

"ओहहह तो ये बात है चलिये आपको इसी वक्त थाने चलना होगा।" थानेदार ने डंडा घुमाते हुए कहा।

"सर..... हम सभी चाहते हैं इस बार मुरारी काका को माफ कर दिया जाये कल त्योहार है बेकार ही घरवाले परेशान हो जायेंगे" मनोज ने कहा।

"ठीक है जैसा आप लोग कहें।" थानेदान ने कहा और सभी वहाँ से चलते बने। कालोनी में पुनः पहले की तरह धूम-धड़ाका हंसी-खुशी का माहौल हो गया।

सुबह जैसे ही मुरारीलाल की बीबी ने झाड़ू के लिये दरवाजा खोला तो जोर से चीख पड़ी, सुनते ही घर का हर एक सदस्य वहाँ दौड़ा आया और सामने देखते ही सबके चेहरे की हवाईंयाँ उड़ गई। उनके घर की देहरी में नाली की कीचड़ से भरे न जाने कितनी मटकी टूटी पड़ी थी गंदगी अंदर बरामदे तक पसर रही थी और बदबू ही बदबू पूरे घर में।

दूर से देख रहे रामदीन दादा के होठ हल्के से मुस्कराते हुए बुदबुदा उठे "बुरे काम का बुरा नतीजा"

रेखा ताम्रकार 'राज'

होली (व्यंग्य)

श्रीमती बबिता चौबे "शक्ति"

1. "होली के रंग"

"माँ.... माँ.... हम भी इस बार रंग और पिचकारी से होली खेलेंगे न बोल... न माँ!"

"नही बेटा.. अब तुम बड़े हो गए हो न.. राजा बाबू हो न!

और फिर क्यों पैसे रंग में और पिचकारी मे खर्च करें,... हम उतने पैसे से तेल लेंगे और क्या खायेगे बोलो...?

"पूरी सब्जी..."

"हाँ हाँ मेरा राजा बेटा,...!

और माँ अपनी गरीबी के रंग को कोसती हुई बच्चे को समझाइश दे मन ही मन घुटने लगी।

2. "जलन "

"आह आह ओ बुआ ये क्या उस युग में तो तुम्हारी ज्वालाये मुझे जरा भी तकलीफ नही दे पाई थी फिर आज ये जलन ये पीडा क्यों बुआ... मत जला मुझे मत जला"

"अरे ! कैसे नही जलेगा तू बेटा न तो आज वो युग है ना वैसे लोग। उस समय जो राक्षस तुझे जलाने लाये थे वो खुद भी तेरे लिये व्याकुल थे वो और मै खुद कभी तुझे पीड़ा देना ही चाहते थे तभी तू पीड़ामुक्त हो कर हंसता रहा !"

"तो अब क्या हुआ बुआ?"

"अब जो आज हमे पराया मानकर जलाने आये हैं वे खुदगर्ज हृदयहीन है जो अपनी बेटी बहुओं को जला देते हैं उनके मन में तुम्हारे लिए कैसी पीड़ा?

और बुआ फिर जल गई और प्रह्लाद फिर वर्ष भर तपन और जलन भोगने तैयार हो गया।

इधर जिंदगी के रंग प्रह्लाद को रँगने आतुर थे।

3. "अट्हास"

"हा.. हा... हा,,, हा.. मैं नही जलूँगी मूर्खो ... नही जलूँगी मैं...!" विकट अट्टहास से होलिका हँस रही थी।

"कैसे नही जलेगी हम तुझे जलाकर ही रहेगे।"

"अरे तू क्या जलायेगा? अरे कायर तू तो केवल कोख की मासूम को मार सकता है! मासूम बहुओं को जला सकता है और मासूमों के चेहरे पर तेजाब फेंक सकता है। क्या तू पहले अपने अंदर की शैतानियत को जला सकता है? क्या तू अपने अंदर की ईर्ष्या रूपी होलिका को जला सकता है और उसकी जलन को मिटा सकता है तो जला। अरे मैं तो तुम सबके जहन में हूँ! और नैतिकता का प्रतीक प्रह्लाद तुम्हारे अन्तः में ही मेरी गोद में दुबका बैठा है !

हा हा हा हा हा हा हा हा हा हा हा हा हा.!

और होलिका दहन का नाटक फिर शुरू हो गया!

4. "रिश्ते"

"ले कर दिया तैयार.. तुझे जलने को..!" मूर्तिकार ने होलिका से कहा,. पर एक बात तो बता,. क्या तू नही जानती की यह गलत राह है, भगवान से विमुख होकर,. तू हर साल उनके विपक्ष में उनके भक्त को जलाने तैयार रहती है आखिर क्यों,..?"

"अरे मुर्ख.. हिरणकश्यप मेरा भाई है भाई.. और रिश्तों में गर मैं यह देखने लगीं की क्या सही क्या गलत.. तो यह गलत होगा न.. प्रेम में प्रश्न नही समर्पण होता है जब प्रहलाद अपने प्रेंम में यह नही सोचता तो मैं क्यों सोचूं अपने भाई के प्रेम में.. खुद की आहुति देती आई हूँ.. दूँगी रिश्तों और प्रेम में सही गलत होता ही नही।

और होलिका की मुस्कुराती ज्वालाएँ आकाश छुने लगी..!

मगर स्वार्थी मनुष्य........?

5. "होलिका की वेदना"

"ओ भैया रहम करो इस मासूम पर.... मत जलाओ मत जलाओ मेरे कलेजे के टुकड़े को..... मुझे अपयश में मत डालो भैया..... प्रभु से बैर मत करो।"

"अरी बहना मैं सब जानता हूँ... पर योद्धा हूँ... योद्धा.... और योद्धा कभी हार नही मानता चाहे कुछ भी हो जाये.... अपने शत्रु को कभी माफ नहीं कर सकता!"

"पर भैया यह तो गलत है न ये तुम्हारा शत्रु नही.... और ये जंग भी नही तो!"

"नही बहना मान की रक्षा भी जंग ही होती है और अब जब जंग छिड़ ही गई है तो भय कैसा... क्या सही... क्या गलत... कौन पुत्र और कौन पिता..!"

"मगर भैया ऐसे तो हमारा तुम्हारा वंश ही समाप्त हो जायेगा!"

"हा हा हा हा हा हा! वंश तो मेरा ही चलेगा, तुम चिंता मत करो मैं वीर होकर ही मारूँगा खुद को झुकने नही दूँगा और आने वाले कलयुग में चारो ओर सिर्फ और सिर्फ मेरे ही वंशज होंगे...मेरे ही वंशज...चारो तरफ... हर तरफ..... हर तरफ... हा हा हा हा हा!

श्रीमती बबिता चौबे "शक्ति" दमोह

खण्ड-2

आज होली में,..!

प्रीति जी ने निमंत्रण भिजवाया
सारे सखा सहेली को तुरंत बुलाया
सब सखी पहने लहगां चुनरिया
बन जाये वृन्दावन की गुजरिया
पिकीं जी,मनोरमा जी,
निधि आरती आई
सीता भाभी, साधना जी
ढोलक साथ में लाई
सबने खेली होली मिलकर
रंग लगाये, बन गये जोकर
लाल गुलाबी हरे नीले पीले
सब हो गये रंग रंगीले
खूब उड़ाई मिल अबीर गुलाल
नाचें गाये किया खूब धमाल
पिकीं जी के टमाटर गाल
लाल रंग से हो गये लाल
बबीता जी ने व्यवहार निभाया

सबको मीठा नमकीन खिलाया
आदिति भाभी की मीठी गुझिया
खा गयी सारी की सारी चुहिया
बबीता जी ने चली प्यारी चाल
कृति को किया बहुत बेहाल
उनके गोरे गाल पर किये गुलाबी
रसगुल्ले की चाशनी चढ़ाई
सबने पी ठड़ाई लाजवाब
उसमें भांग मिली बेहिसाब
भांग के नशे में इतराये
मस्ती में झूमे नाचे गाये
ढोल बजाते, फाग गीत गाते
बजते ढोलक तबला नगाड़े
सब है होली के अतिथि हमारे
होली की हुड़दंग में
सबको मेरा प्रणाम
बुरा ना मानो होली में
देना मुझे क्षमा दान

मंजू सरावगी
रायपुर छतीसगढ़

गड़बड़झाला

नवीन जी बेचारे बैठे सोच रहे
क्यों रख लिया नाम अकेला
सत्यप्रसन्न जी राजेंद्र जी कैलाश जी
विवेक जी शीतल जी मुकेश जी
सबके सब छोड़ गए मुझे अकेला
पहुँच गए गुझिया पपड़ियाँ खाने
बबीता जी किरण जी मंजू जी
केवरा जी साधना जी के घर
ब्रजेश जी हो गए मगर विफल
सोचा झाँसी से दिल्ली पास है
चलते हैं कृति जी के घर
कृति ने ताला लगाया निकल ली बाहर
विफल जी हो गए विफल
न लड्डू मिले देसी घी के
न मिली गुझिया उनको
दौड़े भागे पहुँचे पिंकी जी के घर

वो भी निकल ली खेलने होली

अपने श्याम जी के संग

भागते भागते फिर पहुँचे

हेमंत जी के घर बोले भैय्या

चलें अब प्रीति समकित के घर

वहाँ पहुँचे तो प्रीति बोली

यहाँ न मिलेगा खाने कुछ

खेलना है तो खेलो रंग मिलेगी भंग

जाओ अदिति मीना के घर

वहाँ मिलेंगे सबको लड्डू गुझिया घेवर!

अदिति रूसिया
वारासिवनी

दोस्ती के रंग

अभी मिली हम को फुर्सत
सब चले गए क्या खेलकर होली
आओ फिर से रंग लगाएं
धूम मचाऐ जमकर टोली
ढोल सुनाई दे दूर दूर तक
कि खेल रहा है अंतरा ग्रुप होली
जिसमें प्रीति पिंकी, कीर्ति
मीना, वंदना, पूनम-2 नवनीता-2
भारती दीदी, विवेक भैया
और हमारे हेमंत, विफल जी साथ
खेलेंगे होली साथ में समधिनें
हमारी मंजू और अदिति जी प्यारी
खेलो समकित जी होली के रंग
रंग जाएं सब दोस्ती के रंग।
बुरा न होली है, पीली है आज
ठंडाई मिलाकर भंग।

किरण मोर

अंतरा की होली

खूब ठिठोली
मिलकर खेलें होली
मेरी ये रंग बिरंगी रंगोली है
देख एक बार मुस्कुरा देना
बुरा न मानो होली है।
हमारे अंतरा ग्रुप के नव रत्न हैं
जिन पर लिखने का प्रयत्न है।
जितने सदस्य हैं उनमें से हैं
कुछ साधारण, कुछ उपरत्न।।

1.प्रीति सुराना

2.कीर्ति प्रदीप वर्मा

3.ब्रजेश शर्मा विफल

4.हेमंत बोर्डिया

5.पिंकी परुथी

6.समकित सुराना

7.अदिति रूसिया

8.अर्पण जैन जी

9.शिखा जैन

ये हमारे नव रत्नों में से हैं

इनपर कुछ लिखने का प्रयास है।

प्रीति जी की प्रीत से

खिला साहित्य उपवन में गुलाब

अंतरा की कीर्ति चहुंओर है

उपलब्धियों का न है हिसाब।

ब्रजेश के हाथ थामे हुए हैं

साहित्य की डोर

पड़ने देते न गांठ है

न पड़ती है कमजोर।

हेमंत जी की गजलों ने

किया है हमें अभिभूत

उत्साहित कर देते सदा

सही समीक्षा का सबूत।

नव सृजन की भोर से

कर देतीं हैं आगाज

भूलों को सुधारती अदिति हैं
किसी को बिना किए नाराज।
ग्रुप का जायजा लिए रहते हैं
आकर कभी कभार
लेकिन नजर सभी पर रहती
रखते हैं ग्रुप को संवार।
अविचल जी दर्शन दे जाते हैं
आकर एक बार, हर माह
परीक्षा हाल की निगरानी कर
सबको कर जाते हैं आगाह।
कभी कभार आतीं है पटल पर
मन को जातीं हैं मोह
भले दूर ग्रुप से रहतीं हैं
लिए हुए हैं सबकी टोह।
ये 21 उपरत्न हैं, जो सबको
लेकर चल रहे हैं साथ
पीछे-पीछे चल पड़े नौसिखिए
सीखने इनके साथ।

1 भारती वर्मा

2 सत्यप्रसन्न जी

3 मीनाक्षी जी

4 पूनम कतरियार

5 गणतंत्र ओजस्वी जी

6 कैलाश जी

8 सुरेखा अग्रवाल जी

9 विवेक दुबे निश्छल जी

10 आदरणीय शून्य जी

11 नीरजा मेहता

12 कैलाश मंडलोई जी

13 बबिता चौबे जी

14 राजेंद्र श्रीवास्तव

15 आशा जाकड जी

16 सुकेशिनी दीक्षित

17 बीना शर्मा

18 आनंद पाण्डेय केवल जी

19 शीतल प्रसाद खंडेलवाल

20 जयकृष्ण चांडक जी

21 नमिता दुबे जी

बाकी हैं हम सारे सदस्य
साधारण से भोले शंकर
जिनको संवारने में साथ सभी हैं
अपना सा बनाने को तत्पर।
दिन रात समीक्षा से अपनी
करते हैं हमें प्रोत्साहित
नहीं रखते हैं अपने किसी भी
शिष्य में कोई अंतर।।
इसी तरह हो जाता है पूरा
हमारा अंतरा परिवार
और मनाते हिल-मिलकर
ईद, दीवाली, होली त्योहार।

किरण मोर कटनी म.प्र.

जोगीरा सा रा रा रा रा

जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

अंतरा में खूब मिले हैं
आज रूहानी नाम
प्रीति से उजली प्रीत मिली
पिंकी से सुहानी शाम
जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

बत्तीस औ' सोलह पृष्ठों में
दिखे नूरानी काम
पुस्तक की अविरल धारा में
बहे रवानी ज्ञान
जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

शिखा भारती किरण कीर्ति
जगमग जिनकी शान

मीनाक्षी पूनम अर्चना अदिति
इनसे समूह की आन
जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

हेमंत, बृजेश, कैलाश, अर्पण
कलम में जिनकी जान
समकित नवीन गणतंत्र विवेक
वाणी करती गुणगान
जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

नये-नये विषयों से सजती
अंतरा हमारी जान
शब्दों को शक्ति भी मिलती
हमको भी पहचान
जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

रस भावों से सजा पटल को
बढ़ा दी मंच की शान

गीत ग़ज़ल औ' दोहा छंद ने
छेड़ दी ऐसी तान
जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

प्यारा सा परिवार ये अपना
अजब है जिसकी शान
प्रीत की लहरें जिसमें बहतीं
अंतरा शब्द शक्ति नाम।
जोगीरा सा रा रा रा रा
जोगीरा सा रा रा रा रा

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

मुस्कानों का बागबान

"प्रीति सुराना दी,

ज्यों अंतरा महफ़िल की आत्मा,

समकित जी तानपुरा तराना।।

पिंकी जी , साहित्य की जान,

विफल जी,सदैव कविराज सफल,

अदितिजी, बिखेरें हर सूं मुस्कान।।

अकेला जी ,नहीं अकेला,

पूरा पारिवारिक मेला,

नवनीता मेरे नाम की पहचान।।

सभी अंतरा परिवार के सदस्यों को होली की राम राम,

रंगोत्सव शुभ रहे,

खिलता रहे मुस्कानों का बागबान।।

नवनीता दुबे नूपुर

अंतरा की अनोखी होली

अंतरा परिवार ने मनाई अनोखी होली
यूँ लगा जैसे सबने खाई भाँग की गोली
झूम रहे हैं सब मन चाहे
बनी रंगोली टोली
प्रीति जी पिचकारी लेकर खेलें आँख मिचोली
समकित जी भी हाथ पकडकर गायें हो हमजोली
गणतंत्र जी भी गुलाल लगाकर
रंग की पुडिया खोली
कीर्ति जी और अदिति जी दोनों सूरत से हैं भोली
चुपके से फिर रंग लगाती कहती होली है भई होली
पिंकी जी की सफेद रंग की
कुरती हो गई पीली
देखो कितनी सुंदर पिंकी
हो गईं रंग रंगीली,
सभी सदस्यों के संग मनाई अनोखी होली
अंतरा परिवार को मुबारक हो होली

मीना विवेक जैन

बुरा न मानो होली है (होली नामकरण)

अदितिजी- सोन चिरैया

गणतंत्र जी- भारत माँ का वीर सिपाही

हेमंत जी- कविताओं का सिंघम

कीर्ति जी- चुलबुली लड़की

प्रीति जी- आइरन लेडी

समकित जी- मिस्टर इंडिया

कृति जी- अन्तरा की बहार आपसे है

ब्रजेश जी- पेलेस ऑन व्हील्स

आरती जी- ईद का चांद

आभा जी- अन्तरा की चमक

केवल जी- केवल आनंद

अनिता जी- सुन्दर सपना

अनिता मिश्रा जी - गायब????

आशा जी- इतना कम क्यों दिखते हो

बबिता जी- मस्तराम मस्ती में, आग लगे बस्ती में

भरत जी- राष्ट्र का गौरव

भारती जी- ममता की मूरत

बीना जी- ऊर्जा वाहिनी

चंचल जी- नाराज़ हो क्या

चंद्रकांती जी- आशीर्वाद बनाए रखें

गायत्री जी- ग़ज़लों की रानी

हेमंत दुबे जी- ट्रांसफर हो गया है क्या आपका विदेश में???

जयकृष्ण जी- हरफनमौला

जितेन्द्र जी- छंद के साधक

कैलाश मंडलोई जी- समाज सेवक

केवरा जी- अन्तरा की महक

माधुरी जी- बरगद का पेड़

मुकेश जी- मनमौजी हैं आप

मनोरमा जी- जय गोविन्द जय गोपाल

मीनाक्षी जी- आपसा न कोई

नमिता जी- खरा सोना

नरेन्द्र जी- इंटरनेशनल खिलाड़ी

नवीन जी- छूना है आसमाँ

नीरजा जी- विष्णुप्रिया

प्रतिभा जी - मधुर मुस्कान

रागिनी जी- महफ़िल की जान

राजेन्द्र जैन जी - मतवाला राही

राजेन्द्र श्रीवास्तवजी- बच्चों के सच्चे मित्र

राजेन्द्र शुक्लाजी - दर्शन दुर्लभ

राधा जी- साहसी महिला को सलाम

राजेश जैनजी - मधुशाला के बिम्ब

राजलक्ष्मी जी- संरक्षक

रमा जी- अद्‌भुत आकर्षण
रविन्द्र बंसल जी- शब्दों के जादूगर
रेखा जी- शिल्पी
साधना जी- गागर में सागर
शीतल जी- हमारा प्रिय कान्हा
सीता जी- मुख्य सदस्य
सुधा जी- सौम्य
सुनीता जी- अभिव्यक्ति का सशक्त उदाहरण आकाश से पाताल तक
शून्य जी- शून्य नहीं अनन्त हैं आप
सुरेखा जी- अहा दिल के करीब हैं आप
वंदना दुबे जी- नारी शक्ति का प्रतीक
विवेक दुबेजी - जब भी आते हैं, धमाल मचा जाते हैं
देवयानी जी- परिवार के लिए वरदान हैं आप
निधि जी- अनमोल
स्वधा जी - स्तुतितुल्य
अर्चना अनुप्रिया जी- अन्तरा का अलंकार
अर्चना कटारे जी- फुर्सत से बनाया है रब ने तुम्हें
अलका रागिनी जी- चैतन्य
किरण जी- सक्रियता को नमन
कैलाश जी सिंघल- पितृतुल्य हैं आप
जागृति जी- आती तो कम हो, पर कमाल कर जाती हो

डॉ आशु जी- परफेक्ट
डॉ सुकेशिनीजी - वन्दनीय
दुर्गेश जी- उन्मुक्त
नवनीता जी- साथ साथ ही रहना
नीता जी- फेसबुक क्वीन
प्रियंका जी - किस्मत से मिले हो आप हमें
पारसनाथ जी - सृजनशील
पूनम जी- तेरा साथ है सबसे प्यारा
प्रणव जी- अधिवक्ता
मंजू जी- प्रतिभाशाली
रचना उपाध्याय जी- चंद्रकिरण
रचना सक्सेनाजी- अप्रतिम
रजनी जी- प्रभावशाली व्यक्तित्व
मीना जी- मनमोहिनी
सविता जी- आते रहिए
अमित जी - ईद का चांद

पिंकी परुथी 'अनामिका'

प्रीति सुराना जी- रंगों की सरदार

ब्रजेश विफल जी- अनोखी खोज

अदिति रूसिया जी- काका हाथरसी

अविचल जी- देखो कटपेस्ट न करना

पिंकी जी- गुलाबी गुलाल

नवीन जैन अकेला

प्रीति सुराना---गुलाल

पिंकी परुथी---चैता(होली-गीत)

कीर्ति वर्मा--- अबीर

अदिति रूसिया---पिचकारी

ब्रजेश विफल जी---भांग

पूनम कतरियार

कोई इसका खोलो राज़?

पिंकी जी-

ज्योत्स्ना तनेजा

पिंकी परुथी है दो नामों का ताज!

फिर कैसे हुई *अनामिका*

कोई इसका खोलो राज़?

कृति गुप्ता

प्रीति - प्रेरणा

पिंकी जी - दीवानी

ब्रजेश जी - शब्दों के जादूगर

समकित भैय्या - मस्तमौला

बबीता जी- बिंदास

मीना- शर्मीली गाँव की गोरी

कीर्ति जी- छैल छबीली

अदिति रुसिया

गणतंत्र जी- हम सब का ताजमहल

हेमंत जी- उभरता सितारा

प्रीति जी- राणा सांगा

समकित जी- पर्दे के पीछे की ताकत

ब्रजेश जी- GGC गीत गजल चेकर

गायत्री जी- बस गजल

जयकृष्ण जी- किंग खान

कैलाश मंडलोई जी- ,..न किसी से बैर

मुकेश जी- अपुन अपनी मस्ती में आग लगे बस्ती में

रागिनी जी- नजाकत अली

राधा जी- झांसी की रानी

रमा जी- हंसते रहो मुस्कुराते रहो

रविन्द्र बंसल जी- उर्दू के डॉक्टर

सुनीता जी - प्रिंसिपल मैडम

शून्य जी- खोज जारी है

सुरेखा जी- दर्द का समंदर

किरण जी- अंतरा की विकेट कीपर

कैलाश जी सिंघल- सो सुनार की एक कैलाश जी की

पिंकी जी - बिना नागा की एडमिन महोदया

श्रीमति व श्री कोरी जी- आल इन वन(लिखा भी लो गवा भी लो

अदिति जी- स्माइल फोरेवर

शीतल खंडेलवाल

बूझो तो जाने ????

बुरा ना मानो होली है

जोगीरा सा रा रा रा

1-बड़ी ही कर्मठ और मेहनती मोहतरमा है आप,

भावनाओं में बहकर सब पर करती हैं विश्वास

जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- डॉ प्रीति सुराना

२-द्वार अंतरा के ये खोलें

देतीं सबको दाद

डॉक्टर साहब के नाम से पिंक पिंक है गाल।

जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- पिंकी परुथी

३-सुघड़,सलोनी,सांवली मंद मंद मुस्कान
पाक कला में निपुण रसोई में करती रहती काम।
जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- अदिति रूसिया

४-एक हाथ में सुई रखें और दूजे में कलम
कभी-कभी तो इनको सिस्टर कहते हैं बलम ।
जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- बबिता चौबे शक्ति

५-सुंदर, सुघड़, सलोनी ये बिहार की छोरी
आसमान में घटे बड़े पर यह चांद है पूरी।
जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- पूनम कतरियार

६-हिंदी गजलों में भयंकर, देते उर्दू पेल

इनकी जीवन नैया, खींचे भारतीय रेल।

जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- ब्रजेश शर्मा विफल

७-सुंदर सुंदर रचनाओं की करते हैं बौछार

एक ऋतु पर नाम है, ग्रुप के राजकुमार

जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- हेमंत बोर्डिया

८-चित्र कला में निपुण, प्रभु का करते हैं शृंगार

लंबाई इतनी मिली के सीढ़ी है बेकार।

जोगीरा सा रा रा रा

उत्तर:- जयकृष्ण चांडक

९- नींव के पत्थर बन कर ये करते रहते काम।
पत्नी इनकी कर रही, जग में रोशन नाम ।
जोगीरा सा रा रा रारा

उत्तर:- समकित सुराना

यूं ही हंसते मुस्कुराते रहो और रहो आबाद
कीर्ति प्रदीप दे रहे सबको मुबारकबाद
जोगीरा सा रा रा रा!

कीर्ती प्रदीप वर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन क्रान्ति का आरंभ

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यात्रा

- प्रथम अन्तरा शब्दशक्ति से सृजन शब्दशक्ति सम्मान 2017 भोपाल में आयोजित जिसमें विमोचत हुआ साझा संग्रह।
- द्वितीय अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 इंदौर में आयोजित जिसमें विमोचत हुए 8 साझा संग्रह और 1 एकल पुस्तक।
- महिला दिवस 2018 में विमोचित हुए वूमन आवाज साझा संग्रह, जिसमें शामिल रहीं 50 से अधिक महिलाएँ।
- लघु पुस्तिका क्रान्ति का आरंभ हुआ सृजन समीक्षा से, जिसमें 49 किताबों का हुआ विमोचन।
- इतिहास में हिन्दी आन्दोलन का बालाघाट में विमोचन।
- भोपाल में आयोजन हुआ वूमन आवाज अवार्ड का जिसमें 55 महिलाओं की 66 पुस्तिकाओं का विमोचन।
- मातृभाषा उन्नयन संस्थान के सहयोग से हिन्दी आन्दोलन को समर्पित 8 पुस्तिकाओं सहित 5 अन्य पुस्तकों का विमोचन।
- दिल्ली में अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 के आयोजन में 60 से अधिक पुस्तकें विमोचित व रचनाकार सम्मानित।
- दिल्ली में मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019 के आयोजन में 30 से अधिक पुस्तकें विमोचन और रचनाकार सम्मानित

- मात्र ११ माह की अवधि से सेवारत
- दो सो अधिक किताबें प्रकाशित
- ५०० से अधिक सम्मानित लोग
- १५० से अधिक एकल पुस्तिकाएँ
- लगभग १५ आयोजन इन ११ माह में
- ५ स्थायी अन्तरा शब्दशक्ति के सम्मान

मूल्य - 135/-